

Written by कुमार सौवीर

Thursday, 29 December 2016 23:23

: 0000 00000000 0000 00 00000 0000000 000000 00 : 00000000 -7 00 0000000000 00000000000
0000 0000000 0000 0000 0000 0000 0000000000 : 0000000 000000 00 0000000 0000000 0000 00
0000000 0000 0000 : 00000000 0000000000 0000 0000 0000, 0000000 000000 0000000000 00000000000
00 00 0000000 0000000000 00000 00 :



000000 000000

00000 : शलभमण्डल त्रिपाठी अब भाजपा में शामिल हो गये हैं। भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अमति शाह से हुई मुलाकत के बाद शलभमण्डल त्रिपाठी ने भाजपा में शामिल होने का फैसला कर लिया। इसके साथ ही उनका होने अपने संसदीय थान आरइबी न-7 के राज्याध्यक्ष के पद से इस्तीफा दे दिया। हालांकि यह पता नहीं चल पाया है कि उनकी रणनीतिक या होगी लेकिन समझा जाता है कि शलभ पूरवांचल के किसी न किसी इलाके से विधानसभा चुनाव लड़ेंगे जरूर।

यूपी ही नहीं, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और उत्तराखंड की पत्रकारिता में शलभ मण्डल त्रिपाठी का नाम बाक्यदा किसी धमक के तौर पर माना-जाना और पहचाना जाता है। मूलतः गोरखपुर के रहने वाले शलभ मण्डल त्रिपाठी ने दैनिक जागरण से अपनी पत्रकारिता की पारी शुरू की और कई पड़ावों-मोड़ों से होते हुए वे आखिरकार आईबी न-7 के राज्याध्यक्ष के पद तक पहुंच गये। नरिदोष, ईमानदार, तेज-तरार और तीखी नजर, सधी नजर, खोजी अंदाज, तय नशाना लगाने में माहिर और मशहूर शलभ शायद यूपी के पहले ऐसे पत्रकार हैं, जो पत्रकारिता के शीर्ष पहुंचने के बावजूद अपने पत्रकारीय कैरियर को छोड़कर अब सक्रिय राजनीति में उतर रहे हैं।



शलभ का नाम अपने पेशे के साथ ही साथ अपने हम-पेशा लोगों के प्रति अगाध प्रेम, आस्था था, श्रद्धा और सच्चे नेह रखने वालों में से शीर्ष पर दर्ज है। शलभ ने अपने नज्दी हतियों को छोड़कर केवल खबर के अलावा किसी और क्षेत्र में दखल किया है, तो वह है मतिरता और भाईचारा। अपने लोगों के साथ हमेशा खड़े रहने वाले शलभ इकलौते ऐसे पत्रकार हैं, जिनकी कआवाज में सैकड़ों नहीं, बल्कि हजारों पत्रकार कजुट आतमोसर्ग कर सकते हैं।

Written by कुमार सौवीर

Thursday, 29 December 2016 23:23

करीब सात साल पहले लखनऊ में हजरतगंज में क सपी-सटी के करतूत पर जब शलभ ने हांक लगाया था, शलभ के साथ हजारों लोग हजरतगंज से मार्च करते हुए सीधे मुख्य यमंत्रि आवास तक जुलूस के शक्ति ल में पहुंच गये थे

सच बात कहूं, तो अतशयोक्ति नहीं होगी वह यह कि मैं शलभ के लिए अपनी जान तक दे सकता हूं शलभ जैसा शख्स स जन्म-जन्म मान् तरों में ही मलि पाता है वह भी अपने पुण्य-प्रसाद के तौर पर

बहरहाल, अगर किसी के यह सीखना हो कि किसी के सम्मान कैसे दिया जाता है, तो उसे सीधे शलभ के समझना, देखना और महसूस करना होगा रही बात मेरी, तो मुझे तो गर्व है कि शलभ मेरा भाई है वैसे क बात और बता दूं आपके शलभ की बेमसाल जोड़ी अगर किसी के साथ चली, तो वह था मनोज रंजन त्रिपाठी दोनों ही दोनों बेमसाल

क्या जाने खुदा क्या जाने हो सकता है कि आजकल में ही मनोज भी शलभाई हो जा हा हा हा